प्रस्तावना

दुनिया के अनेक देशों में राष्ट्रवाद को बहुत नकारात्मक रूप से लिया जाता है। जर्मनी व इटली में नाजिम, फासिज्म, के रूप में राष्ट्रवाद आया। वर्तमान संदर्भ में विश्व के समक्ष राष्ट्र की परिभाषा का संकट है। दुनिया में राष्ट्र की कोई परिभाषा नहीं है। संयुक्तराष्ट्र संघ को अधिकार है कि वह किसी भी श्रेष्ठ राज्य को संप्रभु राष्ट्र की मान्यता दे सकता है। इस मान्यता के कारण राष्ट्रों की संख्या बढ़ती-घटती रहती है। सोवियत संघ पहले एक राष्ट्र था, अब वह 14 राष्ट्र हो गए हैं। यूगोस्लाविया पहले एक राष्ट्र था, अब 6 राष्ट्र हो गए हैं। इंडोनेशिया भी पहले एक राष्ट्र था ईस्ट तैमूर अलग हो गया तो वह संख्या बढ़ गई है। संयुक्त राष्ट्र संघ चार्टर में राष्ट्र की कोई परिभाषा नहीं है। इसकी वजह है संयुक्त राष्ट्र संघ के पास कोई मानक नहीं होना जो राष्ट्र को परिभाषित कर सके। इसलिए राष्ट्र एक मजाक का विषय बन गया है। उदाहरण स्वरूप, एक व्यक्ति भारत में पैदा होता है तो उसकी राष्ट्रीयता भारतीय, फिर पाकिस्तान जाने पर वहां की और बांग्लादेश जाने पर वहां की हो जाती है। अर्थात, एक व्यक्ति जीवन में 3 तरह की राष्ट्रीयता हासिल कर लेता है। राष्ट्र की अवधारणा निर्मित इकाई के रूप में हो गई है। राष्ट्र को बनाने-बिगाड़ने की समझ के कारण अराजकता की स्थिति पैदा हो गई है। इस अराजकता को दूर करने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सीधा हस्तक्षेप किया। परमपूज्य श्री गुरुजी और पंडित दीनदयाल उपाध्यायजी ने इस अराजक स्थिति को ठीक करने राष्ट्र को भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का नाम दिया।

राजनीति शास्त्र में राष्ट्र का मतलब नेशन है। नेशन लैटिन से बना है। यह शब्द यूरोप में सामंती राज्य खत्म होने के बात औद्योगिक क्रांति के समय आया। भाषा विज्ञान में पता चला कि नेशन नया शब्द है, राष्ट्र बहुत प्राचीन शब्द है। ऋग्वेद में राष्ट्र शब्द का अनेक बार जिक्र है। भारतीय वाङ्मय में राष्ट्र शब्द पढ़ने के बाद यह सोचना पड़ता है कि राष्ट्र को नेशन शब्द देना क्या उचित है? वाङ्मय जिसको राष्ट्र कहता है उस तक यूरोप को पहुंचने में अभी बहुत समय लगेगा। भूमि के प्रति समाज के रिश्ते से ही राष्ट्रीयता परिभाषित होती है। भारतीय मनीषियों ने समाज को भूमिपुत्र कहा है। विष्णु पुराण में कहा गया है, **'उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चौव दक्षिणम्। वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः।।'** समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण की भूमि का नाम भारत है। वहां के लोग उसकी संतान हैं।